Vol 6 Issue 12 Sept 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

# Review Of Research Journal

Chief Editors

**Ashok Yakkaldevi**
**A R Burla College, India**

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

**Welcome to Review Of Research**

**RNI MAHMUL/2011/38595** **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

## Regional Editor

Dr. T. Manichander

## *Advisory Board*

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Awadhesh Kumar Shirotriya

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [ M.S. ]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2017

REVIEW OF RESEARCH

# बिरसा मुण्डा के विशेष संदर्भ में मुण्डा जनजाति का सामाजिक-सांस्कृतिक योगदान

गाइड
डॉ. यादव गुजर
प्राध्यापक एवं इतिहास विभाग प्रमुख (निवृत्त)
आर.टी.एम. नागपुर विद्यापीठ ,नागपुर.

शोधकर्ता
श्रीमती अंजु ए. शरण
सहाय्यक प्राध्यापक,
श्रीमती बिंझाणी महिला महाविद्यालय,नागपुर.

## प्रस्तावना

छोटानागपुर की जनजातीय संस्कृति भारतीय समाज की एक अमूल्य निधि है। यही एक ऐसा प्रदेश है जहाँ देश के प्रमुख तीन प्राचीन सांस्कृतिक धाराओं-आग्नेय, द्रविड़ तथा आर्य की त्रिवेणी प्रवाहित होती रहती है । छोटानागपुर के घने अरण्यों से लेकर सुरम्य घाटियों तथा समतल मैदानों में अधिवासित जनजातियाँअपनी सांस्कृतिक कैनवास पर इंद्रधनुषी छटा बिखेरती नजर आती है।

बर्तमान का झारखंड राज्य जो पूर्व में छोटानागपुर के नाम से अपनी भौगोलिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से अलग पहचान रखता है। यह पठारी क्षेत्र है और विश्व के प्राचीनतम भूखंड का अंश है। यहाँ की प्राकृतिक सम्पदा अद्वितीय है। यह भारत के सम्पूर्ण क्षेत्रफल का २ प्रतिशत है। परन्तु यहाँ का खनिज उत्पादन और खनिज भंडार ३०% प्रतिशत है । झारखंड के उत्तर में बिहार, पश्चिम में छत्तीसगढ़, दक्षिण में उड़ीसा तथा पूरब में पश्चिम बंगाल है। यहाँ एक विशिष्ट सभ्यता का जन्म एवं विकास हुआ जो अपनी एकात्मकता को बाह्य प्रभावों के आक्रमण से बचाने में सफल रही। छोटानागपुर के वनों और जंगलों में आदिवासी जनजातियाँ जैसे - मुण्डा, हो, उराँव, संथाल, चेरों तथा खरवार, बिरहोर आदि आकर बस गये।

## उद्देश्य

औपनिवेशिक व्यवस्था के विरुद्ध छेड़े गये संघर्ष में भारत की जनजातियों ने अपनी पैतृक भूमि पर बाहरी लोगों द्वारा अनाधिकार प्रवेश के विरोध में छोटानागपुर में अनेक बार संगठित हिंसात्मक विरोध हुआ । यह विरोध शक्तिशाली के विरुद्ध शक्तिहीन एवं संगठित साधनसंपन्न लोगों के विरुद्ध सीधे-सादे और अबोध लोगों की पहले से ही हारी, निराशाजनक स्थितियों से पूर्ण लड़ाई है। मुण्डा जनजाति ने इन बाहरी लोगों (अंग्रेजों) को अपने बीच से उखाड़ फेंकने का कठिन प्रयास किया। बिरसा मुण्डा उनके नेता ने अपने शौर्यगाथा और प्रेरणा से आन्दोलन को एक नया आयाम दिया। मुण्डा जनजाति ने अपनी पैतृक भूमि व्यवस्था को क्षत-विक्षत होने से बचाने के लिए सशस्त्र विद्रोह किया। ईसाई धर्म के प्रचार के साथ मिश्नरियों का प्रभाव काफी तेजी से बढ़ रहा था। मुण्डा संस्कृति पर इसके बुरे प्रभाव से मुण्डाओं की सामाजिक-नैतिक प्रणाली विघटित होने लगी। मुण्डाओं की पूरानी समाज-व्यवस्था की जड़ें तक हिल गई।

## व्याप्ति

उन्नीसवीं शताब्दी के पहले दशक में छोटानागपुर ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन आया तो एक अंग्रेज अफसर जिले का प्रभारी बनकर आया। डॉ. जॉन और डेविडसन ने लिखा है कि १८०९ से ब्रिटिश शासकों ने तथाकथित जमींदारी व्यवस्था शुरू कर दी। जिससे मुण्डा समाज विघटन के कगार पर पहुंच गया। एक ही मूल वंश की दो शाखाएँ मुण्डा और पाहन एक-दूसरे से भिड़ने को आबद्ध हो गये। दिकूओं (बाहरी लोगों) ने सभी पूराने प्रमुख प्रधानों का स्थान छीन लिया। वस्तुतः सम्पूर्ण छोटानागपुर में अभी भी अंग्रेजों को निकाल बाहर करने की एक क्षीण आशा बनी हुई थी। कम्पनी शासन के विरुद्ध असंतोष काफी बढ़ने लगा।

## क्षेत्र

मुण्डा समाज को पुर्नजीवन प्रदान करने का बीड़ा बिरसा मुण्डा ने उठाया। बिरसा ने जिस प्रकार अपने समाज की बुराइयों को अच्छी तरह समझ कर दूर करने की कोशिश की उससे आदिवासियों को लगा कि बिरसा के माध्यम से ही वे अंग्रेजों को छोटानागपुर से निकाल बाहर कर सकते थे। मसीहा और राजनीतिज्ञ बिरसा परिस्थितियों की देन था। बिरसा जिसने अंग्रेज शासकों के सामने सिर नहीं झुकाया, अपने आदिवासी स्वभाव के साथ समझौता नहीं किया। किसी तरह की उपलब्धि की इच्छा किये बिना आजीवन अपने लोगों के लिए संघर्ष करता रहा। उसके विषय में जितना भी बताया जाये सूरज को दीपक दिखाना होगा।

मानवशास्त्री मुण्डा जाति को भारत की ही नहीं, विश्व की एक प्राचीनतम जाति मानते हैं। छोटानागपुर में सर्वप्रथम जमीनों की सफाई कर खेती करने का श्रेय मुण्डा जाति को दिया जाता है जो २००० वर्ष से भी अधिक समय से रहते आये हैं। कुछ शोधकर्ताओं का यह विश्वास है कि मुण्डा जाति के वंशज हडप्पा और मोहनजोदड़ों की सभ्यता के जनक थे। शरतचंद्र राय ने रामायण, महाभारत और ऋग्वेद जैसे ग्रंथों के अध्ययन के बाद यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि आर्यों के

आगमन के पश्चात मुण्डा जाति उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, रोहिलखंड और अवध होती हुई बिहार और फिर छोटानागपुर के सिंहभूम और रांची में अपना अंतिम पड़ाव सुनिश्चित किया।

आदिवासी जनसमुदाय द्वारा औपनिवेशिक व्यवस्था के विरुद्ध छेड़े गये संघर्ष की कहानी है। बिरसा ने अपनी बिरादरी के लोगों के लिए एक स्वर्णिम युग की परिकल्पना की। मुण्डा समाज को पुर्नजीवन देने का बीड़ा उठाया। जहाँ तक मुण्डा संस्कृति का संबंध है उस पर तीन प्रमुख बाहरी शक्तियों का प्रभाव पड़ा। ये शक्तियाँ थी - असुर, हिन्दू और ईसाई। मुण्डाओं ने अनुभव किया कि असुरों का प्रभाव अनुचित है, क्योंकि इससे मुण्डाओं के सामाजिक जीवन में बहुत बड़ी-बड़ी बुराईयाँ आ गई थी। जादूगरिनों और भूत-प्रेतों का डर लोगों में बैठ गया था। समाज में जादू-टोना आदि का प्रचलन शुरू हो गया था। बिरसा पर तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों एवं बुराइयों का अच्छा-खासा प्रभाव पड़ा। इन धर्मो की अच्छी बातों को मिलाकर एक नये धर्म के प्रचार ने उन्हें एक प्रभावोत्पादक उपदेशक के रूप में काफी लोकप्रिय बना दिया। सीधे सादे आदिवासी उनका अनुशीलन कर उन्हें भगवान मानने लगे - वही सिंगबोंगा अर्थात सूर्य भगवान है। उनका कहना था कि सूर्य आसमान पर है और बिरसा धरती पर है। बिरसा को धरती पिता की तरह पूजने वाले बिरसैत कहलाये उनका एक पंथ बन गया।

ब्रिटिश सरकार के आगमन से पूर्व ही सामंती व्यवसथा के कारण छोटानागपुर में भूमि संबंधी बिखराव शुरू हो गया था। इससे पूर्व मुण्डाओं की आंतरिक सामाजिक व्यवस्था अत्यंत ही सुव्यवस्थित थी। सामाजिक या प्रशासनिक विवाद में गांव के प्रधान मुण्डा अंतिम निर्णय देते थे। लेकिन अंग्रेज अधिकारी उनके जंगल के अधिकार को छीनने लगे। अपनी इच्छा से जंगल-जमीन का उपयोग नहीं कर पाना आदिवासियों के लिए बड़े कष्ट की बात थी। मुण्डाओं के लिए जंगल-जमीन माँ के समान थी जो अपनी संतान को जरूरत की सभी सुविधाएँ - भोजन, वस्त्र और आवास का अधिकार देती थी। बाहरी शक्तियों के अनाधिकार प्रवेश से उनकी भूमि व्यवस्था का आर्थिक विघटन शुरू हो गया। उनके सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन में दिकू (बाहरी लोगों) का आगमन घातक सिद्ध हुआ।

छोटानागपुर के आदिवासियों पर इस प्रकार का शोषण भारत के किसी भी दूसरे भाग में कभी नहीं हुआ था। बिरसा मुण्डा एक ऐसा नेता था जिसने सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक नेता के रूप में अपने मुण्डा भाईयों को एकता के माध्यम से मुक्ति दिलाने का अथक प्रयास किया। अपने जीवन के इस अल्पकाल (१८७२ - १९००) में इतना कुछ अपने समाज के लिए अर्पण किया कि जिसकी जानकारी बहुत कम लोगों को ही है। इसी कारण मैंने (झारखंड) छोटानागपुर के बिरसा मुण्डा के इतिहास के कुछ पहलूओं को रखा है। उनकी जीवन अवधि बहुत ही कम रही। उन्होंने अपने जीवन की पहली पारी ही पूरी की थी कि देहावसान हो गया। २५ वर्ष की छोटी सी अवधि में भी बिरसा ने अपने आन्दोलन जिसे 'उलगुलान' की संज्ञा दी गयी हैं जन आन्दोलन में बदल दिया। वह कार्य महान था।

मुण्डा समाज अंग्रेजी शासकों के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए नये नेता के नेतृत्व की प्रतीक्षा कर रहा था। ऐसी ही प्रतिकूल परिस्थिति में ब्रिटिश राज को चुनौती देने बिरसा के नेतृत्व में एक जीवन्त आन्दोलन की शुरूआत हुई। शोषण के दर्दनाक कीचड़ में बिरसा कमल की भांति प्रकट हुए। एक कमल जो भवन की दहलीज पर ही बिखर गया, परन्तु बिखरने के इस क्रम में देश की माटी में कुछ इस तरह समां गया कि एक शताब्दी के बाद भी वह भगवान की उपाधि का स्वाभाविक स्वामी बना हुआ है।

बिरसा का आरम्भिक जीवन भी करीब-करीब उसी तरह के थे जैसे किसी मुण्डा बच्चे के रहे होंगे। उन्होंने अपना जीवन १८८६ से १९९० तक चाईबासा में बिताया और वहीं पर उन्हे १८९१ में वैष्णव विद्वान श्री आनंद पांड के सम्पर्क में आकर यज्ञोपवीत धारण किया और शुद्धता तथा धर्म परायणता पर जोर देना शुरू किया। उनकी प्रेरणा से आर्युवेद, पूराण, महाभारत सहित वैदिक साहित्य का अध्ययन किया। १८९४ तक बिरसा बढ़कर एक बलिष्ट और सुन्दर युवक बन चूके थे। ५ फूट ४ इंच लम्बा आकर्षक और अच्छे नाक-नक्श वाला, बड़ी-बड़ी आंखों में अजीब सी चमक थी। वह बहुत बुद्धिमान था। समाज और देश की दुर्दशा पर गहन चिंतन में एकांतवास में उन्हें दिव्य ज्ञान प्राप्त हुआ। ईश्वर का साक्षात्कार हुआ। समर्थकों ने दावा किया कि बिरसा को महाप्रभु विष्णु भगवान के दर्शन हुए। लौटकर आने पर वनवासी समाज उन्हें धरती आबा (पिता) मानने लगे।

लेकिन आदिकाल से चले आ रहे आदिवासी मुण्डाओं के परम्परागत सामाजिक ढांचे में दरार आने लगी। उन्हें अपने ही घरों को छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ा। राजा के लोग उनकी जमीनों का जाली पट्टा तैयार कर उनकी जमीनें हड़पने लगे। राजा एवं बाद में अंग्रेजी सरकार एक निश्चित धनराशि टैक्स में वसूलने लगे। फरियाद करने पर भी उन्हें न्याय नहीं मिलता। यहीं से विद्रोह का एक सिलसिला शुरू हुआ जिसे मानव-शास्त्रियों ने विवशता का आर्तनाद (A Cry of Despair) कहा है।

बिरसा की दबी आकांक्षा उभरकर सामने आने लगी। १८९५ आते-आते उनकी ख्याति और प्रसिद्धि मुण्डा देश के अन्दर तक पहुंच चूकी थी। वे एक पैगम्बर के रूप में उभरकर सामने आये। उन्होंने अज्ञानता, अन्याय और अत्याचार के खिलाफ एक युद्ध छेड़ दिया। बिरसा ने दावा किया कि उसे दुनिया की सभी शक्तियाँ प्राप्त है। देशी दवाओं का अध्ययन कर लोगों का इलाज करने लगे। एक बार गांव में फैले चेचक के रोगियों को चंगा करने के कारण लोग ठीक होने लगे। एक बार एक बीमार बच्चे के सर पर हाथ फेरकर मंत्र पढ़ा तो फूंक मारने से बच्चा स्वस्थ हो गया। उसी प्रकार गांव में महामारी फैलने पर रोगियों को कतार में बैठाकर अपने पवित्र जनेऊ से स्पर्श कर देर तक मंत्रपाठ करते रहे। लोग ठीक होते गये। उनके अलौकिक मनोवैज्ञानिक प्रभाव, विश्वास या फिर प्रार्थना की शक्ति थी कि लोग रोगमुक्त हो जाते थे।

एक समाजसेवी और उपदेशक के रूप में बिरसा के मासूम चेहरे से अलौकिक सौन्दर्य बरसता था। उनके सिर पर 'हिसीमुकी पगड़ी' (बीस हाथ का सफेद साफा) बंधा होता था। वे दिन में तीन बार प्रार्थना करते, सप्ताह में सिर्फ एक ही बार भोजन करते थे। भगवान की कृपा से वे जीवित रहते थे। उन्होंने लोगों को सफाई रखने, शाकाहारी जीवन बिताने और हंड़ियाँ शराब का प्रयोग बंद करने को कहा। उन्होंने बिरसैत धर्म चलाया। बृहस्पतिवार उनके जन्मदिन के दिन लोगों को खेत-जमीन जोतने से मना किया। ईसाई लड़के-लड़कियों से विवाह संबंध न रखें। उन्होंने अपने धर्म में कोई नई बात नहीं की बल्कि इसमें सभी धर्मों का सार निहित था।

बिरसा की आन्तरिक शक्ति के बारे में कहा जाता है कि वह डायनों की आंखें देखकर पहचान जाते थे। उन्हें चोरी करना, झूठ बोलना, भीख मांगना, हत्या करना आदि सभी को पाप समझते थे। बलि-प्रथा उन्हें बिलकुल पसंद न थी। अनुयायियों से चीटियों की तरह मेहनती तथा प्रेमपूर्वक मिल-जुलकर रहने के लिए कहा। उन्हें खसरा कोरा का अवतार माना जाने लगा। जिसने असुरों का नाश किया।

एक महत्त्वपूर्ण घटना यह थी कि वे कुछ मित्रों के साथ जंगल में घूम रहे थे तो ऐसा लगा कि आकाश से बिरसा के ऊपर बिजली गिरी और बिरसा के चेहरे और शरीर का रंग बदल गया। उनका सांवला रंग पीतवर्ण में बदल गया। इस घटना से बिरसा को एक चमत्कारिक व्यक्ति होने की पुष्टि कर दी। उनके चमत्कारों की कहानियाँ फैलती गयी। एक बार एक भेड़ बिरसा के सामने आया और तीन बार सर झुकाकर प्रणाम किया। एक बैल ने भी अभिवादन में सर झुकाया। अंधेरा होने पर वे

घर से बाहर नहीं निकलते थे। विशेष मौकों पर अपना चेहरा या एक हाथ अधखुले दरवाजे से दिखाते थे ताकि लोगों को विश्वास हो कि उनका शरीर सुनहला हो गया है।

मुण्डा आन्दोलन को नेस्तनाबूद करने का सरकारी अभियान जोरों से शुरू था। महिलाओं की इज्जत भी लूटी गयी। प्रारंभ के दिनों में बिरसा के बढ़ते प्रभाव को सरकार ने गंभीरता से नहीं लिया। बिरसा संघर्ष के लिए पूरी तरह तैयार थे। एक समाजसेवी और धर्मगुरू के रूप में वे जाने जा चूके थे। अब उनका ध्यान प्राचीन धार्मिक मूल्यों को पुर्नस्थापित करने की तरफ गया। अपने समर्थकों को विश्वास दिलाया कि मुण्डा संस्कृति के स्वर्णयुग को वे फिर से जीवित करेंगे। संघर्ष का आगाज अपने पूर्वजों के धार्मिक स्थलों की यात्रा से किया। बिरसा ने रांची के चुटिया एवं जगन्नाथपुर मंदिरों की यात्रा कर गौरवशाली अतीत से अनुयायियों को परिचित कराया।

प्राचीन चुटिया मंदिर को १६८५ में नागवंशीय राजा रघुनाथ ने बनाया और चुटिया गांव की स्थापना बिरसा के पूर्वज चुटु के नाम पर की गई थी। २८ जनवरी १८९८ को बिरसा अपने पूर्वजों के अभिलेखों को खोजने रांची में स्थित जगन्नाथपुर मंदिर में प्रवेश किया जिसे १६९१ में ठाकुरशाही ने बनवाया था। अन्य पैतृक स्थानों की यात्रा की। नवरत्नगढ़ किले में प्रवेश करने गये तो उन्हें वहाँ अपने पूर्वजों की आवाज रात में सुनाई दी। ''क्या तुम तैयार हो''? जिसके उत्तर में कहा गया कि ''हाँ हम तैयार है।'' इसी क्रम में बिरसा अकेले भुवनेश्वर के जगन्नाथ मंदिर गये और वहाँ एक सप्ताह रूके।

बिरसा आन्दोलन की निर्णायक घटना ९ जनवरी १९०० को सैलरकब की डोम्बारी पहाड़ी पर हुई। बिरसा का हिंसक उपद्रवी रूप अल्पकाल तक ही चला। कुछ तीर-धनुष, गुलेल और कुल्हाड़ियों के सहारे उन्होंने उस समय की सबसे सशक्त, साम्राज्यवादी शक्ति को चुनौती दी थी। बिरसा आन्दोलन और नेतृत्व उन्नीसवीं सदी या उसके कुछ बाद के जनजातीय समाज की अपनी एक विशेषता थी। मुण्डा प्रायः एक शताब्दी से भूमि उपद्रव के शिकार रहे थे। वे ब्रिटिश विरोधी बने। अपने दिसुम या अपने प्रदेश के लिए लड़ रहे थे।

३ फरवरी १९०० की जेलयात्रा से बिरसा आन्दोलन का पटाक्षेप हो गया। डेढ़ सौ वर्षों से चले आ रहे मुण्डा आदिवासियों के सशस्त्र विद्रोह को भी विराम लग गया। जेल के अन्दर बिरसा की तबियत बिगड़ती चली गयी और उन्हें हैजा हो गया। ९ जून की सुबह खून की उल्टी हुई और बेहोशी की हालत में प्रातः नौ बजे उनकी मृत्यु हो गई। बिरसा की असामायिक मृत्यु ने अनेक प्रश्नचिन्ह खड़े किये जो संदेह के घेरे में है। अपनी जाति को हर तरह के अत्याचारों से मुक्ति दिलाने के लिए वचनबद्ध महामानव को दानवी शक्ति ने पराजित कर दिया। एक आदिवासी मुण्डा ने अपने देश, जाति, धर्म और संस्कृति के लिए शांतिपूर्वक अपनी कुर्बानी दे दी। आनेवाली पीढ़ी उनके उत्सर्ग से प्रेरणा प्राप्त करेगी। 'Though Birsa Died Birsaisam continued and is still continuing among the Mundas." Patna High Court Judgement by Taylor Fredlee

प्राचीन सभ्यता और संस्कृति के दावेदार मुण्डा जाति की मणि के रूप में बिरसा की पहचान है। मुण्डा आदि धर्म की पूकार को अनसूना न कर सके। बिरसा ने लोगों की दबी भावनाओं को उभारने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। उनका आन्दोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में उन्हें अमरत्व प्रदान कर गया।

बिरसा की छबि हाथ में जलती मशाल लिए एक विद्रोही नेता के रूप में ही नहीं बल्कि एक पूरे समुदाय के पुर्नजागरण के प्रतीक के रूप में है। उन्होंने एक उपेक्षित और शोषित मानव समूह को देश की मुख्य धारा में जोड़कर सिर उठाकर जीने का संबल और उद्देश्य दिया।

# Publish Research Article
# International Level Multidisciplinary Research Journal
# For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

## Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

## Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com